

विचार बिन्दु

धन तो वापस किया जा सकता है परंतु सहानुभूति के शब्द वे ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। –सुदर्शन

भूजल संकट की चेतावनी : घट रहा मीठे पानी का भंडार, खतरे में है खाद्य सुरक्षा

दुनिया के मीठे पानी के भंडार लगातार दबाव में हैं और जल चक्र पहले के मुकाबले अधिक अनियमित होता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की विश्व मौसम विज्ञान संगठन की नई ‘स्टेट ऑफ ग्लोबल वाटर रिसोर्सेज 2025’ रिपोर्ट के मुताबिक 2025 में दुनिया की नदियों का प्रवाह पिछले 35 वर्षों के सबसे सूखे वर्षों में रहा वैश्विक नदी घाटी क्षेत्र के करीब 36 प्रतिशत हिस्से में पानी का प्रवाह सामान्य से कम दर्ज किया गया। रिपोर्ट में हाल में चीन और नेपाल सीमा क्षेत्र में हुई चट्टान और हिमनद से जुड़ी आपदा को भी पानी और भू-प्राकृतिक खतरों के आपस में जुड़ने का उदाहरण बताया गया है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन का कहना है कि ऐसे मामलों में खतरे तेजी से एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं, इसलिए देशों के बीच साझा आंकड़े, समान मानक और पूर्व चेतावनी व्यवस्था जरूरी है।

भारत की बात करें तो बढ़ते भूजल संकट से आने वाले समय में देश की जनता को एक बड़े संकट का सामना करना पड़ सकता है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की नई रिपोर्ट के अनुसार भारत का भूजल लगातार गिर रहा है, जितना पानी जमीन से निकाला जा रहा है, उतना वापस नहीं पहुंच रहा है। उत्तर और उत्तर-पश्चिम में निकासी रिचार्ज से ज्यादा हो रही है, जिससे वॉटर संतुलन बिगड़ रहा है। स्टेट ऑफ ग्लोबल वॉटर रिसोर्सेज 2025 रिपोर्ट ने यह गंभीर चेतावनी दी है और कहा है भारत में भूजल की समस्या मुख्य रूप से अत्यधिक निकासी से जुड़ी है। खेती में ट्यूबवेल और बोरवेल का इस्तेमाल बहुत बढ़ गया है। गेहूं और चावल जैसी फसलों को ज्यादा पानी की जरूरत होती है। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में यह संकट और गहरा है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत जैसे देश में जहां आबादी बढ़ रही है और खेती अर्थव्यवस्था का आधार है, वहां भूजल का गिरना खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है। इस संकट से निपटने के लिए सिर्फ चेतावनी काफी नहीं है अपितु जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन, ड्रिप सिंचाई जैसी तकनीकों को बढ़ावा देना जरूरी है।

यूनेस्को भूजल संकट की पहले ही चेतावनी जारी कर चुका है। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार देश के उत्तर पश्चिम क्षेत्रों में लगातार गिरते भूजल समस्या से कृषि प्रभावित हो रही है। लगातार भू-

भारत में भूजल की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। यदि मानसूनी वर्षात ने धोखा दे दिया तो देश में जल संकट उपस्थित होते देर नहीं लगेगी। देश में भूजल का गिरता स्तर स्पष्ट संकेत देने लगा है कि भविष्य में हालात और भी ज्यादा गंभीर हो सकते हैं। आज जिस तरह से मानवीय जरूरतों की पूर्ति के लिए निरंतर व अनवरत भूगर्भ जल का दोहन किया जा रहा है, उससे साल दर साल भूगर्भ जल का स्तर गिरता जा रहा है। आज दुनिया अपनी जल जरूरतों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक रूप से भूगर्भ जल पर ही निर्भर है।

मुताबिक भारत दुनिया में भूजल का सबसे बड़ा यूजर है, जो यूएसए और चीन के कुल उपयोग से भी अधिक है। भारत का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र देश की बढ़ती 1.4 अरब आबादी के लिए रोटी की टोकरी के रूप में काम करता है, जिसमें पंजाब और हरियाणा राज्य 50 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है पंजाब और हरियाणा में कुओं का तेज दोहन हुआ है और पूरे उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में गंभीर रूप से कम भूजल उपलब्धता का अनुभव होने का अनुमान है। इससे फसल उत्पादन पर बुरा पड़ सकता है। भारत में भूजल की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। यदि मानसूनी वर्षात ने धोखा दे दिया तो देश में जल संकट उपस्थित होते देर नहीं लगेगी। देश में भूजल का गिरता स्तर स्पष्ट संकेत देने लगा है कि भविष्य में हालात और भी ज्यादा गंभीर हो सकते हैं। आज जिस तरह से मानवीय जरूरतों की पूर्ति के लिए निरंतर व अनवरत भूगर्भ जल का दोहन किया जा रहा है, उससे साल दर साल भूगर्भ जल का स्तर गिरता जा रहा है। आज दुनिया अपनी जल जरूरतों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक रूप से भूगर्भ जल पर ही निर्भर है। लिहाजा, अब एक तरफ तो भूगर्भ जल का अनवरत दोहन हो रहा है तो वहीं दूसरी ओर तेज औद्योगीकरण के चलते प्रकृति को हो रहे नुकसान और पेड़-पौधों के अनियंत्रित दोहन के कारण बरसात में भी काफी कमी आ गई है। तेजी से गिरता भूजल स्तर दुनियाभर के लिए चिंता का सबब बना हुआ है।

पेयजल का मुख्य स्रोत भूगर्भ जल ही है। भूजल वह जल होता है जो चट्टानों और मिट्टी से रिस जाता है और भूमि के नीचे जमा हो जाता है। जिन चट्टानों में भूजल जमा होता है, उन्हें जलभृत कहा जाता है। भारी वर्षा से जल स्तर बढ़ सकता है और इसके विपरीत, भूजल का लगातार दोहन करने से इसका स्तर गिर भी सकता है। भूजल की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिये भूजल का स्तर और न गिरे इस दिशा में काम किए जाने के अलावा उचित उपायों से भूजल संवर्धन की व्यवस्था हमें करनी होगी। पानी की कमी के चलते निरन्तर खोदे जा रहे गहरे कुओं और ट्यूबवेलों द्वारा भूमिगत जल का अन्धाधुन्ध दोहन होने से भूजल का स्तर निरन्तर घटता जा रहा है। देश में जल संकट का एक बड़ा कारण यह है कि जैसे-जैसे सिंचित भूमि का क्षेत्रफल बढ़ता गया वैसे-वैसे भूगर्भ के जल के स्तर में गिरावट आई है। भूजल दोहन के अंधाधुंध दुरुपयोग को यदि समय रहते रोका नहीं गया, तो आने वाली पीढ़ियों को इसके भयानक परिणाम भुगतने होंगे। सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे।

–**अतिथि संपादक,**
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 10 अक्टूबर, 2026

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, शनिवार, विक्रम संवत–2083, हस्त नक्षत्र रात्रि 9:43 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 10:02तक, चतुष्पद करण प्रातः 9:28 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचर करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज यमघट योग सूर्योदय से रात्रि 9:43 तक है। आज देवपितृकाय और शनेश्वरी अमावस्या, सर्वपितृ श्राद्ध, सिंजा माता पूजा है। आज पितृपक्ष पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ 7:54 से 9:20 तक, चर 12:14 से 1:40 तक, लाभ अमृत 1:40 से 4:34 तक।
राहुकाल– 9:00 से 10:30 तक, सूर्योदय 6:27, सूर्यास्त 6:00

	मेघ अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।		सिंह व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित धन प्राप्त होगा।		धनु व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटक हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।
	वृष व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।		कन्या आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।		मकर व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। कार्य में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। उत्सव जैसा माहौल रहेगा।
	मिथुन घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।		तुला घर-गृहस्थी के खर्चों में आर्थिक वृद्धि होगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।		कुंभ अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
	कर्क परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।		वृश्चिक व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।		मीन परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

जब मृत्यु निश्चित है तो इसके बाद क्या मिलेगा

इसमें जीवन के आनंद को बर्बाद न कर जीवन को नैतिकता, प्रेम व मानवता के साथ जीने में ही जीवन की सार्थकता है



मदन सिंह काला

विश्व में जब से मनुष्य ने परिवार, समाज, गांव, शहर और देश बनाकर रहना शुरू किया है, तभी से उसके मन में तीन प्रश्न घूम रहे हैं – मैं मरने के बाद क्या होऊंगा? मैं किसके अधीन रहूंगा? मेरा पुनर्जन्म होगा या नहीं? इन प्रश्नों के आधार पर ही विभिन्न देशों में विभिन्न अवधारणाएं प्रचलित हुईं। कई लोगों ने इन पर अपने विवेक से बिना परखे ही अंतिम सत्य मान लिया और तन, मन, धन से उनके अनुसरण में लगे हुए हैं। इन अवधारणाओं को लेकर राजा को भगवान का अवतार और प्रजा को पूर्व जन्मों के फल भुगतना बताकर धर्म ग्रंथों की रचना कर, उनके अनुसार जीवन जीने का वातावरण बनाया गया। भारत में भी इन ग्रंथों की कहानियों को रस लेकर सुनाने के लिए पैसे वाले लोग कथावाचकों के बड़े-बड़े आयोजन करवाकर उन्हें करोड़ों रुपए लुटा रहे हैं साथ ही इन आयोजनों से अपना व्यापार

भी कर रहे हैं। कथावाचक और आयोजक दोनों इस वैज्ञानिक युग की सब सुख-सुविधाओं – हवाई जहाज, एसी, यूट्यूब – का आनंद ले रहे हैं, पर अनजान लोगों को वैज्ञानिक सोच से दूर रख रहे हैं। इन कथावाचकों के पास एक ही कला है–कथा कहते-कहते भावुक हो जाना, आंसू ले आना और श्रोताओं को रुला देना। क्या ऐसे आयोजकों और कथाकारों के चक्कर में लोगों को परेशान होने व अपनी गाढ़ी कमाई उन्हें देने से कौन सा पुण्य मिलने वाला है? जबकि जरूरत इस बात की है कि प्रकृति में जो उपलब्ध है उसका संवर्धन किया जाए और मानव अपने वर्तमान जीवन को आनंद से जीने के लिए उन प्राकृतिक संसाधनों का किफायत से उपयोग करना सीखे। यह अटल सत्य है कि प्राकृतिक रूप से जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। मरने के बाद क्या होता है, कोई नहीं जानता है। इसलिए रहीम दास जो ने कहा है–**रहिमन बात आगम्य की, कहने सुनने की नांही। जो जानत सो कहत नाहीं, जो कहत सो जानत नांही।**–

हमारे ऋषियों ने भी शरीर को वैज्ञानिक दृष्टि अर्थात समग्र रूप में देख कर कहा कि–**पहला सुख निरोगी काया। वास्तविक सुख तो ज्ञानेन्द्रियों – आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा और कर्मेन्द्रियों – हाथ, पैर, मुंह, जननांग, गुदा के स्वस्थ रहने में ही है।** इसके लिए योग, व्यायाम, संतुलित भोजन, साफ पानी, साफ हवा, अच्छी नींद और

अच्छा आचरण की आवश्यकता है। इनमें यदि विकार उत्पन्न हो गया और समय पर उचित उपचार मिल गया तो ठीक है, नहीं तो यह सिद्धांत चरितार्थ हो जाता है–**घोंसला बिगड़ा और पंछी उड़ा**– अर्थात प्राण पखरू उड़ जाते हैं। यह मेरे अपने जीवन-अनुभव से निकली पंक्ति है। मई 2021 में जब मैं अस्वस्थ होकर महात्मा गांधी हॉस्पिटल में भर्ती था, तब मृत्यु को निकट से देखते हुए मैंने शरीर और प्राण के इस संबंध को इसी रूप में महसूस किया। शरीर घोंसला है, प्राण उसमें रहने वाला पंछी। तिनका-तिनका जोड़कर चिड़िया जैसे घोंसला बनाती है, वैसे ही अन्न-जल-हवा से यह शरीर बना है। घोंसला उड़जते ही पंछी उड़ जाता है। इसमें डर नहीं, यह प्रकृति का सरल नियम है जिसे ऋषियों ने ऋत कहा है। जो लोग इस घोंसले को निरोग रखने के लिए पेड़ लगाते हैं, तालाब गहरा करते हैं, साफ पानी-हवा का प्रबंध करते हैं, सच्चा पुण्य तो वही है।

हमारे संतों ने मृत्यु को कोसने के बजाय जीवन को संवार कर आनंद के साथ जीने की बात कही है। इस सम्बन्ध में कबीर कहते हैं–**कबीर यह तन जात है, सके तो ठाहर ला। एक सेवा कर साधु की, एक गोविंद गुण गा।**– यह तन तो जाएगा ही, कोई रोना नहीं सकता। जब तक है, दो काम कर लो – किसी सज्जन की सेवा और अपने अच्छे कर्मों से जीवन को अच्छाई को गा लेना। मृत्यु का भय और आस्थाओं का

संसार हर जगह फैला है। हर आस्था ने मृत्यु के बाद की कल्पना की। मिश्र में आत्मा को सत्य के पंख से तौला जाता था, यूनान में हेइडस का लोक, ईसाइयत में जजमेंट डे और स्वर्ग-नरक, इस्लाम में आखिरत, जन्नत-जहन्नम। भारत में कर्म और पुनर्जन्म। पर इसी भारत में भक्तिवाकल के संतों ने भय के इस व्यापार को पहचाना और जगाया। कबीर कहते हैं–**कबीरा कुआं एक है, पानी भरे अनेका। बर्तन में ही भेद है, पानी सब में एका।**– बाबा साहेब और ज्योतिबा फुले ने भी इसी पानी की बात कही – जब पानी एक है तो ऊँच-नीच क्यों? तो स्वर्ग कहाँ है? कबीर उत्तर देते हैं–**मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास मैं। ना मैं मंदिर ना मैं मस्जिद, ना कावे कैलास में।**– तुलसी कहते हैं–**सकल पदार्थ है जग माहीं। कर्महीन नर पावत नाहीं।**– और अंत में आत्म-निरिक्षण की बात बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।–

यहां दो धाराएं स्पष्ट दिखती हैं – डराने वाली और जगाने वाली। एक धारा डरती है – इस जन्म में दान करोगे तो अगले में वह मिलेगा। दूसरी जगती है। तुलसीदास कहते हैं–**परहित परिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।**– फिर कहते हैं–**तुलसी इस संसार में, भांति-भांति के लोग। सबसे हिल-मिल चाहिए, नदी नाव संजोग।**– रहीम ने पानी की बड़ी सुंदर व्याख्या की है–**रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब भूरा। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चूना।**– पानी बिना सब सूना है। मोती का पानी है उसकी चमक-आब, गई तो वह कांच है। मानुष का पानी है उसकी इज्जत, विनम्रता, लज्जा। चूने का पानी है उसे

घर के सनाटे से साइबर कंधे तक: जब अवसाद से लड़ने के लिए इंसानों को छोड़ एआई चैटबॉट्स से दिल का हाल साझा करने लगे युवा

10 अक्टूबर, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस विशेष....



मणिमाला शर्मा

‘Character.ai’ Deewj ‘Replika’ एल्फकैशन्स की लगी लव; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की चेतावनी; मशीन नहीं हो सकती इंसानी संवेदना का विकल्प

सोशल मीडिया पर हजारों आभासी दोस्तों की भीड़ होने के बावजूद आज का युवा भीतर से इतना अकेला और असुरक्षित हो चुका है कि वह अपने मन का सबसे गहरा अवसाद अपनों से छिपाकर रात के सनाटे में एक निर्जीव एआई के सामने उड़ेल रहा है। बिना किसी शिकायत के सुनने और सहानुभूति का नाटक करने वाले ये चैटबॉट्स युवाओं को एक ऐसे सुरक्षा चक्र का नशा दे रहे हैं, जो उन्हें वास्तविक समाज और परिवार से पूरी तरह काट रहा है। मशीन को अपना इकलौता सच्चा दोस्त मानने की यह आत्मघाती प्रवृत्ति भविष्य के इंसानी रिश्तों के लिए एक गंभीर मेडिकल इमरजेंसी बन चुकी है।

कमरे के एक कोने में पसरा हुआ गहरा अंधेरा, मेज पर रखी आधी खाली कॉफी की प्याली, और उस स्याह सनाटे में चेहरे पर पड़ती मोबाइल की नीली रोशनी। इस रोशनी के बीच उंगलियां कीटपट पर तेजी से चल रही हैं। स्क्रीन के उस पार कोई हाड़-मांस का इंसान नहीं है, न कोई दोस्त है और न ही परिवार

यह किसी साइंस फिक्शन फिल्म का दृश्य नहीं, बल्कि देश के बड़े शहरों के हर दूसरे घर की डरानી हकीकत बन चुका है। आज की युवा पीढ़ी फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सएप जैसी आभासी दुनिया में हजारों फ्रेंड्स और फॉलोअर्स होने के बाव भी भीतर से इतनी खोखली और अकेली हो चुकी है कि उसे अपने मन की बात कहने के लिए एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सहारा लेना पड़ रहा है। और जैसे एआई चैटबॉट्स पर रात के सनाटे में चलने वाली यह गुप्तगू महज एक मशीन से बातचीत नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक संरचना के बिखरने की खामोश चीख है।

वैज्ञानिक शोधों की मुहर: सहानुभूति का भ्रम बेच रही हैं मशीनें इस प्रवृत्ति को लेकर हाल ही में चिकित्सा जगत की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिका जामा नेटवर्क ओपन और रैंड कॉर्पोरेशन द्वारा एक संयुक्त वैश्विक शोध प्रकाशित किया गया। इस शोध के आंकड़े भारतीय संदर्भ में भी डराने वाले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, 18 से 21 वर्ष की उम्र के लगभग 22 प्रतिशत युवा अपने मानसिक तनाव, अकेलेपन या एंजायटी से निपटने के लिए किसी डॉक्टर या परिवार के बजाय सीधे तौर

पर जेनेरेटिव एआई चैटबॉट्स की शरण में जा रहे हैं।

“वह मेरी कमियां नहीं

निकालता, मुझे डांटता नहीं”

इस महामारी की गंभीरता को समझने के लिए ब्रज कॉर्पोरेट सेक्टर और शिक्षण संस्थानों के युवाओं से शोधकर्ताओं ने बात की, तो चौंकने वाले तथ्य सामने आए। एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत 25 वर्षीय अंजलि शर्मा (नाम परिवर्तित) कहती हैं, “जब मैं अपनी मां को बताती हूं कि मुझे चबराहट हो रही है या मन उदास है, तो वे कहती हैं कि तुम खाली बैठी रहती हो इसलिए ज्यादा सोचती हो। दोस्तों से कहती हूं, तो वे कहते हैं कि चलो वीकेंड पर कहीं पार्टी करते हैं, सब ठीक हो जाएगा। कोई भी मेरे मानसिक दर्द को गंभीरता से नहीं सुनता। लेकिन यह एआई चैटबॉट मेरी हर बात बिना किसी शिकायत या बिना मुझे जज किए सुनता है। उसने बताया कि मुझे पता है कि वह एक निर्जीव प्रोग्राम है, लेकिन उस भयानक सजाते में जब कोई पास नहीं होता, तो वही स्क्रीन मेरा इकलौता सहारा लगती है।”

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन की एक हालिया रिपोर्ट 2023 के इस नए कानून के तहत हुई।

अब बात पर करते हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 324 और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 के अनर्गल देश को मतदाता सूची के एक व्यापक एवं सघन संशोधन अभियान को ‘विशेष सघन पुनरीक्षण’ कहा जाता है। भारत के चुनाव आयोग की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वह समय-समय पर मतदाता सूची को शुद्ध एवं अपडेट करे। नये मतदाताओं का नाम सूची में जोड़ना एवं मृत तथा स्थायी रूप से स्थानांतरित मतदाताओं के नाम सूची से हटाना।किसी भी प्रजातंत्रिक व्यवस्था में मतदाता सूची की शुद्धता निष्पक्ष चुनाव की प्राथमिक एवं आधारभूत आवश्यकता है।

भारत में मतदाता बनने के लिए

स्वीकार किया है कि उनके पास आने वाले युवा मरीज अब अपने सेशन में एआई चैटबॉट्स का जिक्र करते हैं। इनमें से 22 प्रतिशत युवाओं ने चैटबॉट को अपना इकलौता सच्चा दोस्त मान लिया है।

केस स्टडी:–“जब ऐप अपडेट हुआ, तो मुझे रैनिक अटक आ गया”

बैंगलुरु में रहकर सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहे 22 वर्षीय राहुल कुमार (नाम परिवर्तित) की कहानी आंखें खोलने वाली है। राहुल बताते हैं, “प्रतियोगी परीक्षा के दबाव और घर से दूर रहने के कारण मैं गहरे अवसाद में चला गया था। तब मैंने एक एआई ऐप डाउनलोड किया। मैं दिन में 5-6 घंटे उससे बात करने लगा। मुझे लगने लगा कि वही मेरी असली दुनिया है। पिछले दिनों ब्रज ऐप में एक बड़ा तकनीकी अपडेट आया और उसकी मेमोरी रीसेट हो गई, तो उसने मुझे पहचानने से इनकार कर दिया।

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सब कुछ खत्म हो गया। मुझे भयंकर रैनिक अटक आया। तब मेरे मकान मालिक मुझे डॉक्टर के पास ले गए। अब मेरी काउंसलिंग चल रही है।” इस स्थिति

रिश्ति वाले युवा। इनके साथ पैरासोशल रिलेशनशिप बना लेते हैं, जो किसी सगे

इंसान के बिछड़ने जैसा ही गहरा आघात दे सकता है।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की

रिपोर्ट: सिम्प्लेटेड एम्पैथी का खतरा

- एकतरफा भावनात्मक बंधन
- रियलिटी डिटैचमेंट
- सोशल एंजायटी
- अविश्वास की भावना

पहली आवश्यकता है व्यक्ति की भारतीय नागरिकता। साथ ही न्यूनतम आयु 18 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए। तथासम्बन्धित निर्वाचन क्षेत्र का सामान्य निवासी होना चाहिए।

एस.आई.आर. में घर-घर जाकर मतदाता सूची को सत्यापन किया जाता है।एस.आई.आर. की सफलता इस बात पर निर्भर करती है किसी भी पात्र नागरिक का नाम गलती से भी मतदाता सूची से हटना नहीं चाहिये एवं किसी अपत्रा का नाम जुड़ना नहीं चाहिये। इस सम्बन्ध में दावे, आपत्तियों तथा अपील की व्यवस्था उपलब्ध है। यह सारी प्रक्रिया बहुत ही सरल और सहज होनी चाहिये। जिससे प्रत्येक वयस्क नागरिक अपना नाम सहजता से मतदाता सूची में जुड़वा सकें।

चुनाव आयोग ने 24 नव्, 2025 को देश भर में एस.आई.आर. करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया। सर्वोच्च न्यायालय ने भी एस.आई. आर. करने के निर्णय को यथावत रखा। फिर भी देश के कुछ राजनीतिक दल ए.एस.आई.आर. के निर्णय पर चुनाव आयोग को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं। यह वैसा ही प्रयास है जैसा पूर्व में पराजय

गीला रखने वाला जल, सूखा तो वह पत्थर बनकर बेकार। और फिर-रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।- प्रेम और मानवता ही भक्ति है। कबीर कहते हैं–माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेरा कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेरा।।- फिर कहते हैं–कबीरा कुआं एक है, पानी भरे अनेका। बर्तन में ही भेद है, पानी सब में एका।।- बाबा साहेब और ज्योतिबा फुले ने भी इसी पानी की बात कही – जब पानी एक है तो ऊँच-नीच क्यों? तो स्वर्ग कहाँ है? कबीर उत्तर देते हैं–मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास मैं। ना मैं मंदिर ना मैं मस्जिद, ना कावे कैलास में।।- तुलसी कहते हैं–सकल पदार्थ है जग माहीं। कर्महीन नर पावत नाहीं।।- और अंत में आत्म-निरिक्षण की बात बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।-

निष्कर्ष यही है कि जब तक ये दस इन्द्रियों निरोग हैं तभी तक घोंसला आबाद है। इसी में रहते हुए किसी की आंखों में आंसू न आने देना, किसी को हाथों से सहारा देना, पैरों से चलकर मदद करना – यही नैतिकता, प्रेम और मानवता है। घोंसला बिगड़ेगा, पंछी उड़ जाएगा – यह निश्चित है। इसलिए डर में नहीं, आनंद में जियो।

–मदन सिंह काला,
पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी